शिवम दुबे ने खोले बचपन के राज, रसोइये और पिता ने पहचाना टैलेंट

नई दिल्ली

भारतीय टीम के स्टार आलराउंडर शिवम दुबे ने दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में अपने बचपन और क्रिकेटर बनने के सफर के दिलचस्प राज खोले। 2024 और 2026 में लगातार दो बार भारतीय क्रिकेट टीम के साथ टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाले शिवम ने बताया कि कैसे उनके घरेलू रसोइये और बाद में उनके पिता ने उनके अंदर के क्रिकेटर को पहचाना।

शिवम ने याद करते हुए बताया कि उनके क्रिकेटिंग सफर की शुरुआत उनके रसोइये की बदौलत हुई, जिसने उनके लंबे छक्के देखकर बाल फेंकने से इनकार कर दिया था। शिवम दुबे ने कहा, मेरे कुक ने दो-तीन बार मुझे बालिंग कराई है। फिर उसने मुझे बालिंग करनी बंद कर दी। मैंने फिर पापा को बोला कि मेरे साथ ये नहीं खेलता है।

फिर पापा ने कुक को डांटा। कुक ने बताया कि ये बहुत दूर-दूर मारता है मैं थक जाता हूं तो फिर खाना कैसे बनाऊंगा। फिर पापा ने बोला कि मेरे सामने बालिंग कराओ उसे। मैंने भी पापा के सामने जोर से मारा, पता नहीं पापा ने मुझमें ऐसा क्या पहचाना कि उन्होंने तभी मुझे क्रिकेटर बनाने की ठान ली थी।

शिवम ने आगे बताया कि जब वह 22 साल के हुए तब भी उन्हें यकीन नहीं था कि वह क्रिकेटर बनेंगे, लेकिन उनके पापा को पांच साल की उम्र से ही लगा था कि वह क्रिकेटर बनेंगे।

शिवम के आलराउंडर बनने की कहानी भी दिलचस्प है। बकौल शिवम वह इसलिए आलराउंडर बने ताकि अगर बैटिंग में नहीं चल पाए तो बालिंग से विकेट निकालकर टीम में अपनी जगह पक्की रख सकें।

अफगानिस्तान के खिलाफ दूसरे टी-20 में खराब फील्डिंग के कारण हुई सोशल मीडिया ट्रोलिंग पर शिवम ने बेबाकी से कहा कि कोई भी फील्डर जानबूझकर गेंद या कैच नहीं छोड़ता। सभी पूरी कोशिश करते हैं कि गेंद को रोका जाए, लेकिन कभी-कभी ऐसा नहीं हो पाता है। ड्रेसिंग रूम के माहौल को शिवम दुबे ने खुशनुमा बताया और रोहित शर्मा व विराट कोहली को बड़े भाई करार दिया। उन्होंने कहा कि दोनों से कभी डर नहीं लगा बल्कि बड़े भाई या दोस्त की फीलिंग आई।

शिवम ने अपने सफल इंटरनेशनल करियर के पीछे इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) को क्रेडिट दिया और आईपीएल में बढ़िया करने के लिए महेंद्र सिंह धोनी की तारीफ की। इतना ही नहीं, उन्होंने गौतम गंभीर को मैदान पर गंभीर, लेकिन ग्राउंड के बाहर मस्तीखोर कहने से भी वह नहीं हिचकिचाए, जिससे भारतीय क्रिकेट के भीतर के सौहार्दपूर्ण माहौल का पता चलता है।

न्यूज ब्रीफ

एशियाई खेलः भारत ने 10 मीटर एयर राइफल महिला टीम स्पर्धा में जीता रजत, पहला पदक हुआ पक्का

आइची-नागोया। इलावेनिल वलारिवन, सोनम मस्कर और विदर्सा के. विनोद की भारतीय तिकड़ी ने 2026 एशियाई खेलों में भारत को पहला पदक दिलाया। भारतीय टीम ने 10 मीटर एयर राइफल महिला टीम स्पर्धा में रजत पदक जीता। आइची प्रीफेक्चरल जनरल शूटिंग गैलरी में भारतीय तिकड़ी ने छह-छह सीरीज के बाद कुल 1898.0 अंक हासिल किए। चीन की जिफेई वांग, जियायु हान और युचेन दू की टीम ने 1904.2 अंकों के विश्व रिकार्ड स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीता। जापान की हिनाता ताइची, मिसाकी नोबाता और शिओरी हिराता की टीम ने 1897.1 अंकों के साथ कांस्य पदक हासिल किया। इलावेनिल वलारिवन और सोनम मस्कर ने महिला 10 मीटर एयर राइफल की व्यक्तिगत स्पर्धा के फाइनल में भी जगह बनाई है, जो बाद में खेला जाएगा। क्वालीफिकेशन में सोनम 634.1 अंकों के साथ तीसरे और इलावेनिल 633.5 अंकों के साथ सातवें स्थान पर रहीं। चीन की जिफेई वांग ने 636.8 अंकों के साथ क्वालीफिकेशन में शीर्ष स्थान हासिल किया। इस पदक के साथ भारत ने इस स्पर्धा में लगातार दूसरी बार एशियाई खेलों में रजत पदक जीता है। भारत ने 2023 में हांगझोउ एशियाई खेलों में भी इस स्पर्धा में दूसरा स्थान हासिल किया था। 10 मीटर एयर राइफल महिला टीम में भारतीय निशानेबाजों का स्कोर :विदर्सा के. विनोद - 630.4 अंक, सोनम मस्कर - 634.1 अंक, इलावेनिल वलारिवन - 633.5 अंक।

एशियाई खेलः सुचिका तारियाल ने पदक पक्का किया, एमएमए के सेमीफाइनल में पहुंचीं

आइची-नागोया। भारत की सुचिका तारियाल ने रवि को 2026 एशियाई खेलों में महिला पारंपरिक 60 किग्रा वर्ग के सेमीफाइनल में पहुंचकर अपना पदक पक्का कर लिया। उन्होंने मिश्रित मार्शल आर्ट्स (एमएमए) में क्वार्टर फाइनल मुकाबले में मंगोलिया की अल्तानचिमेग बैगलमा को 2-0 से हराया। 36 वर्षीय सुचिका की इस जीत के साथ कम से कम कांस्य पदक सुनिश्चित हो गया है। अब वह फाइनल में जगह बनाने के लिए सिंगापुर की हुई हून तेओ या ईरान की अरेजू सलीमिगालेहताकी में से किसी एक का सामना करेंगी। मिश्रित मार्शल आर्ट्स इस बार एशियाई खेलों में पदार्पण करने वाली छह खेल विधाओं में शामिल है। इसके अलावा फ्रीस्टाइल बीएमएक्स, टैकबाल, पैडल, सर्फिंग और वर्चुअल ताइक्वांडो भी पहली बार एशियाई खेलों का हिस्सा हैं।

आस्ट्रेलिया के ब्रेंडन डागेट का भारत दौरे पर फोकसः टेस्ट टीम में जगह बनाना

चेन्नई। आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज ब्रेंडन डागेट अगले साल भारत में होने वाली प्रतिष्ठित बार्डर-गावस्कर

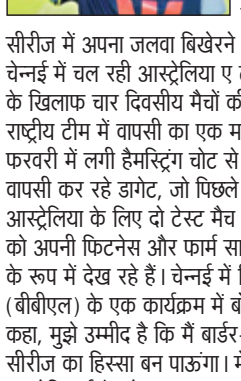

ट्राफी के लिए आस्ट्रेलिया की सीनियर टेस्ट टीम में अपनी जगह पक्की करने की उम्मीद के साथ भारत ए के खिलाफ आगामी सीरीज में अपना जलवा बिखेरने के लिए तैयार हैं। चेन्नई में चल रही आस्ट्रेलिया ए टीम के साथ भारत ए के खिलाफ चार दिवसीय मैचों की सीरीज उनके लिए राष्ट्रीय टीम में वापसी का एक महत्वपूर्ण मंच है। फरवरी में लगी हैमस्ट्रिंग चोट से उबरकर क्रिकेट में वापसी कर रहे डागेट, जो पिछले घरेलू सत्र में आस्ट्रेलिया के लिए दो टेस्ट मैच खेल चुके हैं, इस दौरे को अपनी फिटनेस और फार्म साबित करने के अवसर के रूप में देख रहे हैं। चेन्नई में बिग बैश लीग (बीबीएल) के एक कार्यक्रम में बोलते हुए, डागेट ने कहा, मुझे उम्मीद है कि मैं बार्डर-गावस्कर टेस्ट सीरीज का हिस्सा बन पाऊंगा। मेरा मानना है कि एक आस्ट्रेलियाई के तौर पर यह सबसे बड़ी सीरीज में से एक है। मैंने भारत में टेस्ट क्रिकेट देखते हुए ही बड़ा हुआ हूं। उन्होंने आगे कहा कि भारत में खेलना वास्तव में बहुत मेहनत और आस्ट्रेलिया तथा इंग्लैंड में मिलने वाली चुनौतियों से बिल्कुल अलग है। अपनी फिटनेस पर बात करते हुए डागेट ने पुष्टि की कि उनका शरीर अभी तक ठीक चल रहा है और वह इंडिया ए के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करने और कुछ टेस्ट क्रिकेट खेलने का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने बताया, मैं शायद पिछले दो महीनों से पूरी तरह फिट होकर दौड़ रहा हूं। सब कुछ अच्छा लग रहा है और नियंत्रण में है। घर पर सर्दी बिताने के बाद, यहां के हालात बहुत अलग होने वाले हैं। हमने गर्मी से थोड़ा तालमेल बिठाने का काम किया है।

युवराज सिंह के छह छक्कों की बराबरी में लगे 14 साल, कीरोन पोलार्ड ने दोहराया था कारनामा

नई दिल्ली

टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में लगातार छह गेंदों पर छह छक्के लगाने का रिकार्ड जब युवराज सिंह ने बनाया था, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि कोई दूसरा बल्लेबाज इसकी बराबरी कर पाएगा। युवराज ने वर्ष 2007 में इंग्लैंड के खिलाफ एक ओवर की छह गेंदों पर छह छक्के लगाकर क्रिकेट जगत में इतिहास रचा था। उनके इस कारनामे की बराबरी करने में दूसरे खिलाड़ी को करीब 14 साल का लंबा इंतजार करना पड़ा था। वेस्टइंडीज के हरफनमौला खिलाड़ी कीरोन पोलार्ड ने वर्ष 2021 में यह उपलब्धि हासिल कर युवराज के रिकार्ड की बराबरी की।

युवराज सिंह ने यह ऐतिहासिक कारनामा पहले टी20 विश्व कप के दौरान किया था। इंग्लैंड के खिलाफ मुकाबले से पहले युवराज शानदार फार्म में नहीं थे। टूर्नामेंट में इससे पहले खेले गए तीन मुकाबलों में उनके बल्ले से महज छह रन निकले थे। स्काटलैंड के खिलाफ उन्हें बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला था, जबकि पाकिस्तान के खिलाफ वह एक और न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच रन बनाकर आउट हुए थे।

इंग्लैंड के खिलाफ मुकाबले में युवराज ने हालांकि आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी शुरू की। एंड्रयू फ्लिंटाफ के साथ मैदान पर उनकी कहासुनी भी हुई। इसके बाद युवराज ने अपना गुस्सा इंग्लैंड के तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्राड पर निकाला। पारी के 19वें ओवर में युवराज ने ब्राड की लगातार छह गेंदों पर छह छक्के जड़ दिए। इस तरह वह टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक ओवर में छह छक्के लगाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज बने। इस रिकार्ड की बराबरी करने के लिए 14 साल बाद कीरोन पोलार्ड सामने आए। वर्ष 2021 में श्रीलंका के खिलाफ पोलार्ड ने भी लगातार छह गेंदों पर छह छक्के लगाए और युवराज के ऐतिहासिक कारनामे की बराबरी कर ली। चूंकि एक ओवर में छह ही गेंदें होती हैं, इसलिए इस रिकार्ड को तोड़ना संभव नहीं है, बल्कि इसकी बराबरी ही की जा सकती है।

इसके बाद इस सूची में नेपाल के दीपेंद्र सिंह ऐरी और समोआ के डेरियस विसर का नाम वर्ष 2024 में जुड़ा। वर्ष 2025 में बुल्गारिया के मनन बशीर ने यह उपलब्धि हासिल की। वर्ष 2026 में नेपाल के कुशल भुर्टेल भी एक ओवर में छह छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में शामिल हो गए।

आंकड़ों में वैभव सूर्यवंशी से भी खतरनाक हैं अभिषेक शर्मा, गेंदबाजों को देते हैं तबाही

नई दिल्ली। भारत बनाम अफगानिस्तान तीन मैचों की टी-20 सीरीज के समापन के बाद, एक खिलाड़ी जिसका नाम हर तरफ गूंज रहा है, वह हैं अभिषेक शर्मा। उन्होंने सीरीज के तीसरे और आखिरी मैच में सिर्फ 30 गेंदों में शतक जड़कर इतिहास के सुनहरे अक्षरों में अपना नाम दर्ज कराया और पहले मुकाबले में भी 82 रनों की दमदार पारी खेली थी। अभिषेक ने पूरी सीरीज में शानदार प्रदर्शन किया और प्लेयर आफ द सीरीज का अवार्ड भी अपने नाम किया। हालांकि, जब भारतीय टीम जिम्बाब्वे दौरे पर थी, तब 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने प्लेयर आफ द सीरीज का खिताब जीता था। दोनों खिलाड़ियों ने अपनी-अपनी सीरीज में दमदार प्रदर्शन किया, लेकिन जब उनके आंकड़ों की गहराई से तुलना की जाती है, तो अभिषेक शर्मा वैभव सूर्यवंशी से भी कहीं अधिक खतरनाक और प्रभावी नजर आते हैं। दोनों खिलाड़ी अपनी-अपनी सीरीज में प्लेयर आफ द सीरीज रहे, लेकिन उनके आंकड़ों में बहुत बड़ा फर्क देखा गया। जो काम वैभव सूर्यवंशी जिम्बाब्वे की सीरीज में नहीं कर पाए थे, अभिषेक शर्मा ने भारतीय सरजमीं पर दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में कर दिखाया। जहां वैभव सूर्यवंशी जिम्बाब्वे में अपने तीन मैचों में 200 के स्ट्राइक रेट को पार नहीं कर पाए थे और उनका स्ट्राइक रेट 196.10 रहा था, वहीं अभिषेक शर्मा ने अफगानिस्तान के खिलाफ 269.41 के अद्भुत स्ट्राइक रेट से रन बनाए, जो अपने आप में एक असाधारण आंकड़ा है। इसी तरह, उस सीरीज में वैभव सूर्यवंशी तीन पारियों में 200 रनों का आंकड़ा पार नहीं कर पाए थे, लेकिन अभिषेक शर्मा ने उतनी ही पारियों में 200 से ज्यादा रन (कुल 229 रन) बना दिए। अभिषेक शर्मा ने 76.33 की कमाल की औसत के साथ रन बनाए, जबकि जिम्बाब्वे सीरीज में वैभव सूर्यवंशी की औसत 50.33 की रही थी। बाउंड्री की बात करें तो वैभव सूर्यवंशी ने उस सीरीज में सिर्फ 15 चौके और 9 छक्के लगाए थे, वहीं अभिषेक शर्मा ने अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज में 18 चौके और 22 छक्के जड़ दिए हैं। इन दोनों सीरीजों में दोनों बल्लेबाजों की तुलना करने पर साफ जाहिर होता है कि जब अभिषेक शर्मा अपने रौद्र रूप यानी फुल फार्म में होते हैं, तो वे वैभव सूर्यवंशी से भी कहीं ज्यादा विस्फोटक और गेंदबाजों के लिए विध्वंसक साबित होते हैं।

एशियाड-2026 के लिए भारतीय रोइंग टीम में अमेठी से चुने गए सलमान खान

अमेठी

उत्तर प्रदेश के अमेठी जनपद के खेल जगत के लिए गौरव का क्षण है। अमेठी के प्रतिभावान खिलाड़ी सलमान खान का एशियाड-2026 के लिए भारतीय रोइंग टीम में चयन हुआ है। उनके चयन की खबर मिलते ही खेल प्रेमियों, खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों और जिले के लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। सलमान खान के चयन को अमेठी की खेल प्रतिभाओं के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि सलमान खान ने अपनी मेहनत, लगन और लगातार अभ्यास के दम पर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। भारतीय रोइंग टीम में स्थान हासिल करना उनके खेल करियर की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में शामिल हो गया है।

एशियाड-2026 में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिलने से जिले के खिलाड़ियों में भी उत्साह का माहौल है। खेल प्रेमियों का मानना है कि सलमान का चयन अमेठी के युवाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

सलमान खान के चयन पर जिले के खेल जगत से जुड़े लोगों ने उन्हें शुभकामनाएं देते हुए प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन की कामना की है। इस अवसर पर वरिष्ठ सहायक शिवकुमार मौर्य, अंतरराष्ट्रीय एथलीट सूबेदार राहुल पाल, राष्ट्रीय खिलाड़ी डा. अब्दुल हमीद, खेल प्रशिक्षक एम.ओ. आसिफ, एम.ओ. नदीम, राकेश कनौजिया, पंकज दूबे, शहादत, राकेश कश्यप, महेन्द्र पाल, एम.ओ. शकील, प्रधानाचार्य रेखा सिंह तथा जितेन्द्र कुमार सहित अन्य खेल प्रेमियों और खिलाड़ियों ने सलमान खान को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

खेल जगत से जुड़े लोगों ने कहा कि सलमान की उपलब्धि जिले के लिए गौरव का विषय है। उनके चयन से अमेठी में रोइंग समेत अन्य खेलों के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ने की उम्मीद है। खिलाड़ियों ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का प्रतिनिधित्व करना प्रत्येक खिलाड़ी का सपना होता है और सलमान ने अपनी प्रतिभा व परिश्रम के बल पर इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है।

अब अमेठी के खेल प्रेमियों की निगाहें एशियाड-2026 में सलमान खान के प्रदर्शन पर टिकी हैं। उम्मीद है कि वह अपनी मेहनत, अनुभव और प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करेंगे और अमेठी के साथ-साथ भारत का नाम अंतरराष्ट्रीय पटल पर रोशन करेंगे।

भारतीय महिला हाकी टीम ने उज्बेकिस्तान को 19-0 से हराया

आइची नागोया। भारतीय महिला हाकी टीम ने गिफू प्रीफेचुरल ग्रीन स्टेडियम में अपने पूल बी के पहले मैच में उज्बेकिस्तान पर 19-0 से रौंदकर एशियन गेम्स 2026 में अपने सफर की शुरुआत धमाकेदार अंदाज में की। भारतीय टीम की जीत में सबसे बड़ी स्टार बनकर दीपिका उभरीं। दीपिका ने आठ गोल किए। इसके अलावा, इशिका ने तीन, लालथंतलुआंगी और नेहा ने दो-दो गोल किए। बलजीत कौर, नवनीत कौर, लालरेमसियामी और साक्षी राणा ने एक-एक गोल किया। भारत का स्कोरकार्ड भारत की ओर से लालरेमसियामी ने छठे मिनट में, दीपिका ने आठवें, 22वें, 26वें, 33वें, 37वें, 38वें और 41वें और 54वें मिनट में, ईशिका ने 12वें, 42वें और 54वें मिनट में, बलजीत कौर ने 13वें मिनट में, नेहा ने 18वें और 29वें मिनट में, लालथंतलुआंगी ने 43वें और 51वें मिनट में, साक्षी राणा ने 44वें मिनट में, नवनीत कौर ने 45वें मिनट में और रुतुजा पिसल ने 23वें मिनट में गोल दागे। दीपिका ने अकेले इस मैच में आठ गोल दागे जो वर्ल्ड रिकार्ड है। किसी एक मैच में यह सबसे ज्यादा इंडिविजुअल गोल है। हाफटाइम तक 8-0 से आगे थी टीम दीपिका की हैट्रिक की बदौलत भारतीय महिला टीम ने जोरदार प्रदर्शन किया, और हाफ-टाइम तक वे उज्बेकिस्तान के खिलाफ 8-0 से आगे थीं।

एशियाई खेल 2026 : भारत को मनु भाकर, ईशा सिंह और राही सहित सभी निशानेबाजों से पदकों की उम्मीद

आइची-नागोया

भारत को जापान के आइची-नागोया में शुरु हुए एशियाई खेलों की निशानेबाजी स्पर्धा में मनु भाकर, ईशा सिंह और राही सरनोबत सहित कई अन्य खिलाड़ियों से पदकों की उम्मीद है। निशानेबाजी में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा है। एशियाई खेलों में भारत के 30 निशानेबाज विभिन्न स्पर्धाओं में भाग ले रहे हैं। ऐसे में इनसे देश को काफी पदकों की उम्मीद है। भारतीय दल में युवाओं के साथ ही अनुभवी खिलाड़ी भी शामिल हैं। को राइफल, पिस्टल और शाटगन, तीनों इवेंट्स में पदक का मजबूत दावेदार माना जा रहा है।

पिस्टल इवेंट्स में भारत की उम्मीदें युवा निशानेबाज मनु भाकर पर लगी हैं।वह 10 मीटर एयर पिस्टल और 25 मीटर पिस्टल दोनों में चुनौती पेश करेंगी। उनके साथ ईशा सिंह भी 10 मीटर एयर पिस्टल और 25 मीटर पिस्टल में दिखेंगी। वहीं अनुभवी राही सरनोबत 25 मीटर पिस्टल में मनु और ईशा का साथ देंगी। इसके अतिरिक्त, सुरुचि सिंह और अनीश जैसे निशानेबाज भी अपनी-अपनी पिस्टल स्पर्धाओं में पदक की दौड़ में होंगे।

राइफल स्पर्धा में ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर, रुद्राक्ष बी. पाटिल और इलावेनिल वलारिवन

भारतीय चुनौती को और मजबूत करेंगे। रुद्राक्ष, जिन्हें बड़े चैंपियनशिप का अच्छा अनुभव है, 10 मीटर एयर राइफल और 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन दोनों मुकाबलों में उतरेंगे। वहीं इलावेनिल वलारिवन चैंपियन, 10 मीटर एयर राइफल में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। आशी चौकसे और तिलोत्तमा सेन जैसी युवा प्रतिभाएं भी राइफल टीम का अहम हिस्सा हैं।

शाटगन दल में भी अनुभवी और युवा निशानेबाजों का अच्छा तालमेल है। पुरुषों की ट्रैप स्पर्धा कायनन चेनाई पर निगाहें होंगी। महिला ट्रैप में नीरू पर नजरें रहेंगी। अनंतजीत सिंह नारुका, भी स्कीट और मिक्स्ड टीम इवेंट में पदक दावेदार हैं।

50 की उम्र में भी संभाली टीम की कप्तानी, इन दिग्गजों ने उम्र को बनाया महज आंकड़ा

नई दिल्ली

क्रिकेट के डेढ़ सौ साल से अधिक लंबे इतिहास में कप्तानी हमेशा चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी रही है। खासकर तब, जब खिलाड़ी उम्र के उस पड़ाव पर पहुंच चुका हो, जहां आमतौर पर क्रिकेटर संन्यास लेने के बारे में सोचने लगते हैं। हालांकि टेस्ट क्रिकेट में कुछ ऐसे दिग्गज भी हुए, जिन्होंने बढ़ती उम्र को अपनी राह में बाधा नहीं बनने दिया।

इन खिलाड़ियों ने 40 और 50 वर्ष की उम्र में भी अपनी राष्ट्रीय टीमों की कप्तानी की और इतिहास में खास जगह बनाई। इस सूची में सबसे पहला और सबसे उल्लेखनीय नाम इंग्लैंड के महान क्रिकेटर डब्ल्यू. जी. ग्रेस का आता है। 1 जून 1899 को नाटिंघम में इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच खेले गए टेस्ट मैच में ग्रेस ने इंग्लैंड की कप्तानी की थी।

उस समय उनकी उम्र 50 साल 320 दिन थी। इस उम्र में कप्तानी करने वाले वह टेस्ट क्रिकेट इतिहास के सबसे उम्रदराज कप्तान बने। उनका यह रिकार्ड आज भी कायम है। ग्रेस का यह मुकाबला टेस्ट इतिहास का 60वां मैच था।

इसके करीब पांच दशक बाद इंग्लैंड के ही गबी एलन ने भी अपनी उम्र और अनुभव का परिचय दिया। 27 मार्च 1948 को किंग्स्टन में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले गए टेस्ट मैच में एलन ने इंग्लैंड की कप्तानी की। उस समय उनकी उम्र 45 साल 245 दिन थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के दौर में उन्होंने अपने अनुभव के जरिए टीम का नेतृत्व किया। यह टेस्ट क्रिकेट इतिहास का 298वां मुकाबला था। इससे एक साल पहले इंग्लैंड के महान बल्लेबाज वाली हैमंड ने भी बढ़ती उम्र में टीम की कमान संभाली थी।

21 मार्च 1947 को क्राइस्टचर्च में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए टेस्ट में हैमंड 43 साल 279 दिन की उम्र में कप्तान बने। यह टेस्ट इतिहास का 284वां मुकाबला था। अपनी बल्लेबाजी और

कप्तानी के लिए मशहूर हैमंड ने लंबे समय तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना प्रभाव बनाए रखा।

आस्ट्रेलिया के वारेन बार्ड्सले भी इस सूची में शामिल हैं। 24 जुलाई 1926 को मैनचेस्टर में इंग्लैंड के खिलाफ एशेज टेस्ट में उन्होंने आस्ट्रेलिया की कप्तानी की थी। उस समय उनकी उम्र 43 साल 233 दिन थी। एशेज जैसी प्रतिष्ठित सीरीज में इतनी उम्र में टीम का नेतृत्व करना उनके अनुभव को दर्शाता है।

आधुनिक दौर में पाकिस्तान के मिस्बाह-उल-हक ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। 10 मई 2017 को रोजो में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट मैच में उन्होंने 42 साल 351 दिन की उम्र में पाकिस्तान की कप्तानी की। मिस्बाह ने अपने अनुभव और अनुशासित नेतृत्व के जरिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अलग पहचान बनाई। इन सभी खिलाड़ियों के करियर यह दिखाते हैं कि टेस्ट क्रिकेट में अनुभव और नेतृत्व क्षमता कई बार उम्र की सीमाओं से कहीं आगे निकल जाती है।